'सहजानंद' सरस्वती और किसान आन्दोलन

पंकज शर्मा (शोधार्थी)
इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग
डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
email–pankaj08041990@gmail.com
Mob. No. 8010201650

सहजानंद सरस्वती किसान आन्दोलन के स्तम्भ कहे जाने वाले सरस्वती जी का जन्म एक भूमिहर परिवार में 22 फरवरी 1889 ई में पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के दुल्लापुर के पास ग्राम देवा हुआ था। वह अपने परिवार में छः पुत्रों में से अन्तिम थे। तब उन्हें नौरंग राय कहा जाता था। इनकी माँ की मृत्यु बाल्यकाल में ही हो गयी थी अतः इनका पालन–पोषण इनकी चाचा–चाची द्वारा किया गया। सहजानंद सरस्वती को स्वामी सहजानंद सरस्वती, उनके आदि शंकराचार्य सम्प्रदाय के दसनामी सन्यासी अखाड़े के दण्डी सन्यासी होने के कारण कहा गया है। 1927 ई के प्रारम्भ में बिहार किसान आन्दोलन ने संगठित होकर रूप लेना प्रारम्भ कर दिया था। स्वामी जी का पश्चिमी पटना कार्यक्षेत्र था अतः इनके द्वारा पश्चिमी पटना में किसान आन्दोलन में हवा दी गयी। इनके द्वारा स्वयं कहा गया था–

''हमें तो मात्र पश्चिमी पटना को जीतना है, इसी विचार से पश्चिमी पटना से ही हमारा किसान आन्दोलन सन् 1927 ई के तुरन्त बाद शुरू हो गया।''

इसके साथ ही कुछ अन्य किसान सभाओं का भी गठन हुआ किसान सभाओं का दौर बिहार में स्वामी सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व मे प्रारम्भ हुआ जिन्होंने सन् 1929 ई0 में 'बिहार प्रान्तीय किसान सभा' (बी0पी0के0एस0) का गठन किया गया था, ताकि उनके कब्जे के अधिकारों पर जमींदारी अत्याचारों के विरूद्ध किसानों की समस्याओं को उठाया जा सके और इसी तरह भारत में किसान आन्दोलन को बढ़ावा मिला। इसके उपरान्त किसान आन्दोलन धीरे–धीरे तीव्र होते गये और सम्पूर्ण भारत में फैल गये। जैसे एन0जी0रंगा द्वारा 'आन्ध्र प्रान्तीय रैय्यत सभा' माल्ती चौधरी द्वारा उड़ीसा में 'उत्कल प्रान्तीय किसान सभा' तथा बंगाल में 'कृषक प्रजापाटी', अकरम खाँ, अब्दुल रहीम व फजलुल हक द्वारा सन् 1929 में प्रारम्भ की गयी। सन् 1935 ई0 में 'किसान संघ' की स्थापना हुई। स्वामी सहजानन्द सरस्वती, एन0जी0रंगा व अन्य के प्रयासों से सभी प्रान्तीय सभाओं को संयुक्त करने का प्रयास किया गया। किसान मोर्चे पर यह सभी क्रान्तिकारी घटनाक्रम 11 अप्रैल 1936 ई0 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लखनऊ सत्र में 'अखिल भारतीय किसान सभा' (ए0आई0के0एस0) के गठन के रूप में फलित हुआ। जिसमें स्वामी जी अध्यक्ष व एन0जी0 रंगा महासचिव चुने गये। स्वामी जी 'बिहार प्रान्तीय किसान सभा' की स्थापना का 1927 ई0 के उत्तरार्द्ध को मानते हुए लिखते हैं–

''किसान सभा का जन्म असल में 1927 ई0 के आखिरी महीनों में ही हुआ था। यह निःसंदेह सत्य है।''

अगस्त 1936 ई0 में 'किसान घोषणा पत्र' जारी किया गया जिसमें जमींदारी प्रथा समाप्त करने व ग्रामीण ऋणों को रद्द करने की मांग की गयी। 'अखिल भारतीय किसान सभा', द्वारा अक्टूबर 1937 ई0 में **लाल झण्डे** को बैनर के रूप में अपनाया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस व अखिल भारतीय किसान सभा के नेताओं के आपसी मतभेदों से वे आपस में दूर होते चले गये तथा बार–बार बिहार व संयुक्त प्रान्त में कांग्रेस सरकारों के साथ टकराव में आये। फैजपुर में कांग्रेस सम्मेलन के समय उनके समान्तर होने वाले अखिल भारतीय किसान आंदोलन की अध्यक्षता एन0जी0रंगा द्वारा की गयी।

स्वामी जी द्वारा 1937 से 1938 ई0 में बकाश्त आन्दोलन का आयोजन किया गया था 'बकाश्त' का शाब्दिक अर्थ–स्वसंवर्धित है। बकाश्त आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य जमींदारों द्वारा बकाश्त भूमि से किरायेदारों को बेदखल करने के विरूद्ध था और इसी कारण 'बिहार किरायेदारी अधिनियम और बकाश्त भूमि' पारित हुआ। स्वामी जी द्वारा बिहटा में डालमियां चीनी मिल में भी संघर्ष का सफल नेतृत्व किया जहाँ किसान मजदूर एकता सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता थी। सुभाष चन्द्र बोस व आल इण्डिया फारवर्ड ब्लाक द्वारा स्वामी जी की भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान गिरफ्तारी के बारे में सुनकर, उनकी गिरफ्तारी/कैद के विरोध में **28 अप्रैल को 'अखिल भारतीय स्वामी सहजानंद दिवस'** के रूप में मनाने का फैसला किया।

''स्वामी सहजनन्द सरस्वती हमारी धरती पर एक ऐसा नाम है जिसे याद किया जा सकता है। भारत में किसान आन्दोलन के निर्विवाद नेता, व आज जनता के आदर्श व लाखों लोगों के नायक हैं। रामगढ़ में अखिल भारतीय समझौता विरोधी सम्मेलन की स्वागत समिति के अध्यक्ष के रूप में उन्हें पाना वास्तव में एक सौभाग्य था। फारवर्ड ब्लाक के लिए उन्हें वामपंथी आन्दोलन के अग्रिम नेताओं में से एक व फारवर्ड ब्लाक के एक मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक के रूप में पाना एक विशेषाधिकार व सम्मान की बात थी। स्वामी जी के नेतृत्व के बाद बड़ी संख्या किसान आन्दोलन के अग्रिणी नेता फारवर्ड ब्लाक के साथ धनिष्ठ रूप से जुड़े रहे।''

स्वामी जी के द्वारा ही सुधारकों के रूप में सर्वप्रथम किसान सभाओं को जन्म दिया गया। अतः इन्हें किसान आन्दोलनों का स्तम्भ कहना गलत नहीं होगा।